International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(1): 149-151

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 149-151
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-01-2018
Accepted: 13-02-2018

डॉ. संगीता अग्रवाल
अध्यक्षा एवं एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, आर्य कन्या पीजी कॉलेज, हापुड, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संगीता अग्रवाल
अध्यक्षा एवं एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, आर्य कन्या पीजी कॉलेज, हापुड, उत्तर प्रदेश, भारत

सुदर्शनोदय महाकाव्य में वर्णित श्रावक की प्रतिमाएं

डॉ. संगीता अग्रवाल

प्रस्तावना

जैन दर्शन में श्रावक के लिए कुछ आ चारों का विधान किया गया है जिनमें श्रावको के लिए 11 प्रतिमाएं मानी गई हैं। एकादश निलयाः [1] इनमें 11 प्रतिमाओं को नि लय अर्थात श्रेणियां कहते हैं। यह श्रेणियां उत्तरोत्तर विकास को लिए हुए हैं। अपनी-अपनी श्रेणियों के गुणधर्म पहले की श्रेणियों के गुणों से बढ़कर होते हैं जैसे 11वीं कक्षा में प्रवेश लेने वाले में दसवीं कक्षा की योग्यता होनी चाहिए वैसे ही उत्तर उत्तर की प्रतिमाओं में पूर्व पूर्व के गुण समाविष्ट रहते हैं। वैराग्य की प्रकृति के अनुरूप इन्हें इस क्रम में रखा गया है कि कोई भी साधक इन का क्रमशः अनुकरण करते हुए जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। 11 प्रतिमाओं के नाम इस प्रकार हैं-

दर्शन प्रतिमा, व्रत प्रतिमा, सामयिक प्रतिमा, प्रोष ध प्रतिमा, सचित त्याग प्रतिमा, रात्रि भोजन त्याग प्रतिमा, ब्रह्मचर्य प्रतिमा, आरंभ त्याग प्रतिमा, परिग्रह त्याग प्रतिमा, अनुमति त्याग प्रतिमा, उच्छिष्ट त्याग प्रतिमा[2] सुदर्शनोदय महाकाव्य में एक वैश्या द्वारा स्व कल्याण का मार्ग पूछे जाने पर सुदर्शन मुनि द्वारा उपदेश के रूप में श्रावक के 11 रूप अर्थात श्रावक की 11 श्रेणियां बताई गई हैं। श्रेणियों का नाम लेखक ने काव्य में नहीं दिया है लेकिन इनके स्वरूप का कथन जब आगम में देखते हैं तो यह 11 प्रतिमा का स्वरूप प्रतीत होता है। महा कवि ने 11 प्रतिमाओं का स्वरूप निम्न प्रकार व्यक्त किया है-

दर्शन प्रतिमा

अतिचार रहित सम्यकत्व को पालने वाला संसार शरीर और भो गों से विरक्त पंच परमेष्ठीयों के प्रति समर्पित रहना दर्शन प्रतिमा कहलाती है। इस प्रतिमा का धारक सात व्यसनों के त्याग के साथ श्रावक के अष्ट मूल गुणों को धारण करता है। भोगों के प्रति उदासीनता आ जाने के कारण वह जिन वस्तुओं में फफूंदी लग गई हो उनका सेवन नहीं करता। वह रात्रि में जल भी ग्रहण नहीं करता। वह नीति न्याय पूर्वक ही अपनी जीविका का निर्वाह करता है। इस प्रतिमा के धारी श्रावक को दार्शनिक श्रावक कहते हैं।

सुदर्शनोदय के अनुसार मांस, अचार, नवनीत, बिना छना जल, वर्षा ऋतु में शाक पत्र, बड़, पीपल, गूलर, अंजीर, पिलखन, रात्रि भोजन, चमड़े में रखे हुए तेल, दो दल वाले अनाज, कच्चे दूध दही और छाछ के साथ मद्य, मधु, भांग तंबाकू, गांजा आदि अभक्ष्य वस्तु का जीवन पर्यंत के लिए त्याग कर देना चाहिए। इसमें त्रस, स्थावर जीवो का

बाहुल्य पाया जाता है। इनका सेवन करने से उनकी विराध- ना निश्चित रूप से होती है ऐसा सर्वज्ञ देव ने कहा है। उनकी आज्ञा मानकर हमें इनका त्याग करने पर प्रथम श्रेणी वाला श्रावक माना जाता है।[3]

व्रत प्रतिमा

दार्शनिक श्रावक के समस्त नियमों का पालन करते हुए शल्य और अतिचार से रहित होकर 5 अनुव्रत, 3 गुण व्रत और 4 शिक्षा व्रत का निरतिचार पालन करना व्रत प्रतिमा है इस प्रतिमा का धारी श्रावक व्रती कहलाता है।

सुदर्शनोदय के अनुसार गुणानुरागपूर्वक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अतिथि को शुद्ध भोजन कराकर स्वयं भोजन करें। स्वपर का हृदय से विचार करना दूसरी सीढ़ी कही गई है अर्थात भावार्थ से प्रतीत होता है कि लेखक आगम वर्णित व्रत प्रतिमा से परिचित थे लेकिन लेखक के कवि होने के नाते अंत दीपक रूप में एक व्रत ग्रहण करने से शेष व्रतों को ग्रहण करने का संकेत कविता की विधानुसार दे दिया है।[4]

सामयिक प्रतिमा

पूर्व की सभी प्रतिमाओं के पालन के साथ कायोत्सर्ग से स्थित, बाहय आभ्यंतर परिग्रह से रहित मन वचन, काया से शुद्ध ऐसा त्रिकाल में वंदना करने वाला श्रावक सामयिक प्रतिमा वाला है।

मध्ये दिनं प्रातरिवाथ सायं यावच्छरीरम तनुमानमायम।
स्मरे दिदानीम परमात्मनस्तु सदैव यनमंगलकारी वस्तु।[5]

प्रातः काल के समान दिन के मध्य भाग में और सायकाल सदा ही परमात्मा का स्मरण करें क्योंकि यह परमात्मा के गुणों का स्मरण ही जीव का वास्तविक मंगल करने वाला है। इस प्रकार तीनों संध्या में भगवान का स्मरण नियम रूप से जीवन पर्यंत करने वाले श्रावक को तीसरी सीढ़ी वाला श्रावक कहा गया है।

प्रोषधोपवास प्रतिमा

पूर्वग्रहीत सभी व्रतों के साथ अष्टमी एवं चतुर्दशी तिथि में अपनी शक्ति को ना छुपा कर प्रोषधोपवास करना चाहिए। अष्टमी और चतुर्दशी पर्व के दिनों में अपनी इंद्रियों को जीतते हुए परम प्रशम भाव को धारण कर अपने मन की प्रवृत्ति को किसी भी आयोग्य देश में कभी भी नहीं जाने देना चाहिए। इस प्रकार यह श्रावक की चौथी सीढ़ी है।[6]

सचित त्याग प्रतिभा

पूर्व की चार प्रतिमाओं का पालन करने वाला दयालु श्रावक कच्चे मूल, फल, शाक कोपल, फूल आदि को नहीं खाता। जैन धर्म एवं वैज्ञानिक दृष्टि से वनस्पतियों में भी जीव रहते हैं। जब तक वे कच्ची अवस्था में रहते हैं सजीव रहते हैं। अग्नि से संस्कारित अथवा यंत्र से पे लित होने पर वे अचित हो जाते हैं। इस प्रतिमा का उद्देश्य संयम का पालन है। इससे प्राणी संयम और इंद्रिय संयम दोनों का पालन करता है। इसलिए वह जल् भी उबालकर पीता है अतः जीवन निर्वाह के लिए लोक में जो भी फल और पत्र जाति की वनस्पति आवश्यक प्रतीत होती है वह जब तक अग्नि से नहीं पकाई जाती तब तक संयमी मनुष्य उसे नहीं खाता। यह जितेंद्रीयता की पांचवी सीढ़ी है।[7]

रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा

इस प्रतिमा का धारी श्रावक रात्रि भोजन का मन, वचन, काय से त्यागी होता है। इस प्रतिमा के धारण करने से पहले वह आवश्यकता पड़ने पर अपने परिजनों को रात्रि भोजन करा सकता है। किंतु इस प्रतिमा का धारी श्रावक रात्रि भोजन की अनुमोदना भी नहीं करता। सुदर्शनोदय के अनुसार छठी सीढ़ी वाला जितेंद्रिय पुरुष दिन में 2 बार से अधिक खानपान ना करें और एक बार खाने का अभ्यास करें तथा मानवता को धारण कर निशा- चरता को न प्राप्त हो अर्थात रात्रि भोजन का त्याग करें। रात्रि में खाकर निशाचर ना बने।[8]

ब्रम्हचर्य प्रतिमा

ब्रह्मचर्य पूर्वक सभी प्रतिमाओं के पालन के साथ मन वचन काया से स्त्री मात्र के संसर्ग का त्याग कर शरीर की अशुचिता को समझते हुए काम प्रवृत्तियों का सर्वथा परित्याग कर देना ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं यदि विवेकशील मनुष्य आत्मा में मन को कुछ काल के लिए भी लगाना चाहता है तो वह सब प्रकार के काम सेवन का त्याग करें क्योंकि इस काम सेवन से विकार को प्राप्त हुआ मन सभी इंद्रियों के विषयों में स्वच्छंद प्रवृत्ति वाला हो जाता है। यही जितेंद्रियता की सातवीं सीढ़ी है।[9]

आरंभ त्याग प्रतिमा

संसार के प्रति बढ़ती हुई उदासीनता के कारण इस प्रतिमा का धारी श्रावक नौकरी, खेती, व्यापार आदि अर्थो- पार्जन एवं घर गृहस्थी के सभी कार्यों का त्याग कर पहले से इकट्ठे सीमित संपत्ति से ही अपने जीवन का निर्वाह करता है। इस प्रकार ब्रह्मचारी मनुष्य आगे

बढ़कर आरंभ उद्योग का त्याग कर अपने आत्मिक गुणों की प्राप्ति के उद्योग में तत्पर होता है। संयमी मनुष्य का आत्म गुण प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील एवं उद्यत होना ही जितेंद्रियता की आठवीं सीढ़ी है।[10]

परिग्रह - त्याग प्रतिमा

पूर्व के सभी नियमों का पालन कर उपयोग की वस्तुओं के अतिरिक्त सभी प्रकार के परिग्रहण- जमीन, जायदाद आदि से विरक्त हो जाना चाहिए। सुदर्शनोदय में कहा भी गया है-

मदीयतवं न चांऽगे ऽपि किम पुनरबाह्यवस्तुषु।
इत्येवमनुसन्धानो धनादिषु विरज्यताम।[11]

जब मेरे इस शरीर में भी मेरी आत्मा का कुछ तत्व नहीं है तब फिर बाहरी धन आदि पदार्थों में तो मेरा हो ही क्या सकता है? इस प्रकार से विचार करने वाले जितेंद्रिय पुरुष को पहले से अर्जित धन आदि में भी विरक्ति भाव रखना चाहिए अर्थात उनका त्याग करना चाहिए। यह श्रावक की नवी सीढ़ी है।

अनुमति त्याग प्रतिमा

इस प्रतिमा का धारी श्रावक अत्यंत उदासीन भाव से तटस्थ होकर रहता है। वह घर गृहस्ती एवं व्यापार धंधों के कार्यों में किसी भी प्रकार की सलाह नहीं देता। वह अपना समय स्वाध्याय, सामाजिक चिंतन आदि में बिताता है। जिस जितेंद्रीय मनुष्य का मन संसार के मार्ग में कभी भी नहीं लग रहा है वह दूसरों को भी सांसारिक कार्यों के करने की अनुमति नहीं देता और वह अपना सारा समय परमात्मा में लगाते हुए उस परम तत्व का चिंतन करता है। यही जितेंद्रियता की दसवीं सीढ़ी है।[12]

उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा

घर को छोड़कर गुरु के पास ब्रतों को ग्रहण करते हुए तप करते हुए भिक्षावृत्ति से ही भोजन करना उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा है। यह श्रावक की सर्वश्रेष्ठ भूमिका है। इस प्रतिमा के धारक के दो भेद होते हैं -छु ल्लक और ऐलक । ज्ञान सागर जी के अनुसार ऊपर बताई गई 10 सीढ़ियों पर चढ़ा हुआ जितेंद्रिय पुरुष जब जीवन के लिए अनुद्दिष्ट भोजन को ग्रहण करता है अर्थात अपने लिए बनाए गए भोजन को लेने का त्यागी बन जाता है और अपने आचार की सिद्धि के लिए अपने चित् को लोक मार्ग में नहीं लगाता है तब वह उद्दिष्ट त्याग रूपी 11वीं सीढ़ी पर अवस्थित जानना चाहिए।[13]

इस प्रकार दार्शनिक से लेकर उद्दिष्ट त्यागी तक श्रावक की 11 श्रेणियां हैं। स्त्री पुरुष सभी इन प्रतिमाओं का पालन कर सकते हैं। पुरुष श्रावक कहलाते हैं और स्त्रियां श्राविका। पहली से छठी प्रतिमा तक के श्रावक जघन्य, सातवीं से नौवीं तक के मध्यम, 10वीं और 11वीं प्रतिमा धारी श्रावक उत्कृष्ट श्रावक कहलाते हैं। वस्तुतः सुसंस्कृत श्रावक ही श्रेष्ठ एवं उन्नत समाज का निर्माण कर सकता है। उसका व्यक्तित्व बहुआयामी होता है। गृहस्थ धर्म सम्यक आधार की ऐसी प्रस्तर शिला है जिस पर समूचे जीवन की संरचना टिकी हुई है। इसलिए गृहाश्रमो समो धर्मो, न भूतो न भविष्यति कहा गया है।

संदर्भ

1. जैन तत्व विद्या, पृष्ठ 139
2. जैन धर्मा मृत-4/129-139
3. सुदर्शनोदय महाकाव्य-2/55-59
4. सुदर्शनोदय महाकाव्य-9/60
5. वही -9/61
6. वही -9/62
7. वही -9/63
8. वही -9/64
9. वही -9/65
10. वही -9/66
11. वही -9/67
12. वही -9/68
13. वही -9/69